।। सत्तगुरू सुखरामजी महाराज के प्रष्ण उत्तर को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ सत्तगुरू सुखरामजी महाराज के प्रष्ण उत्तर को अंग अरथ लिखंते ||

प्रष्ण || कर्म कौन कराता ?

उत्तर || कर्म चाहणा कराता ।

प्रष्ण || चाहणा कैसे उपजती ?

उत्तर || चाहणा भुक प्यास पिडा से ।

प्रष्ण || बुध्दी भ्रष्ट कायसे होती ?

उत्तर || काम जागृत होनेसे ।

प्रष्ण || काम कैसे रूकता ?

उत्तर || परमात्मा की लाज शरम मरजाद रखनेसे ।

प्रष्ण || शरम लाज मरजाद कौन रखता ?

उत्तर || जीव

प्रष्ण || कुबुध्दि काय से आवे ?

उत्तर || अती खुसीयाली से ।

प्रष्ण || निंद्या काय से आवे ?

उत्तर || द्वेष,मत्सर से ।

प्रष्ण || द्वेष काय से आवे ?

उत्तर || गर्व गुमान से ।

प्रष्ण || गर्व गुमान का मुल कोण ?

उत्तर || अज्ञान

प्रष्ण || अग्यान काय से आवे ?

उत्तर || अहंकार से ।

प्रष्ण || अहंकार किसको होवे ?

उत्तर || हलकी निच बुध्दीवाले कूं ।

प्रष्ण || आपा याने मै मै काय से होवे ?

उत्तर || अभिमान से ।

प्रष्ण || सुध्द बुध्द केसे गई ?

उत्तर || क्रोध से जाती व सुध्द जाणेसे बुध्दी जाती ।

प्रष्ण || नीच स्वभाव का लक्षण क्या ?

उत्तर || दूसरे की चुगली करना ।

प्रष्ण || चुगली कोण कराता ?

उत्तर || हलका चित्त ।

प्रष्ण || मान कोण चाहता ?

उत्तर ।। मन

प्रष्ण ।। मन हिन याने कमजोर कायसे होता ?

उत्तर ।। दत्त याने धन नही रहनेसे ।

प्रष्ण ।। सोभा मान इन सबकी चाहना किसको ?

उत्तर ।। मनको

प्रष्ण ।। सील विश्वास संतोष कायसे आवे ?

उत्तर ।। अनुभव से ।

प्रष्ण ।। परमारथ कार्य कौन करता ?

उत्तर ।। सतस्वरुपी साधु

प्रष्ण ।। साधु पराया कारज कैसे करता ?

उत्तर ।। जीवोको आपके शरण लेकर जीवोको कालसे मुक्त करता

प्रष्ण ।। साधु की सेवा बंदगी कायसे होवे ?

उत्तर ।। भाव से ।

प्रष्ण ।। धर्म पूण्य कैसे करे ?

उत्तर ।। परमोद से ।

प्रष्ण ।। सरम,लाज काय से रखता ?

उत्तर ।। बडोकी मेर मर्यादा सें ।

प्रष्ण ।। मेर मर्यादा का बंधन क्या ?

उत्तर ।। रामजीका व उत्तम विवेकी लोगोका भय ।

प्रष्ण ।। मीठी और निर्मळ बोली कायसे ?

उत्तर ।। वचन विचार कर बोलणे से ।

प्रष्ण ।। ईश्वर मिलणेका उपकार किसने किया?

उत्तर ।। गुरू ने ।

प्रष्ण ।। ध्यान ग्यान की विवेक समज कहाँसे मिली ?

उत्तर ।। सतस्वरुप साधु संग सें ।

प्रष्ण ।। भक्ति करने का योग कौन बताता ?

उत्तर ।। सतगुरू

प्रष्ण ।। भक्ति करणे का सभाव काय से आवे ?

उत्तर ।। भक्ति के भाग्य कर्म से ।

प्रष्ण ।। ब्रम्ह भक्ति का भेद काय से मिले ?

उत्तर ।। पुर्व के कमाई से ।

प्रष्ण ।। लघुताई कोण देवे ?

उत्तर ।। चाह

प्रष्ण ।। मन मे तलब(चाहा)काय से लगे ?

उत्तर ।। पुर्व जन्मके अंकुर से ।

प्रष्ण ।। भेद काय से मिले ?

उत्तर ।। भाव से ।

प्रष्ण ।। भेद काय से आवे ?

उत्तर ।। प्रेम से ।

प्रष्ण ।। प्रेम काय से आवे ?

उत्तर ।। प्रिति से ।

प्रष्ण ।। त्याग काय से आता ?

उत्तर ।। तर्क से ।

प्रष्ण ।। जगत काय से छोड़े ?

उत्तर ।। बैराग से ।

प्रष्ण ।। बैराग काय से उपजे ?

उत्तर ।। मत ग्यान से ।

प्रष्ण ।। जीव काय से जागे ?

उत्तर ।। सबद से ।

प्रष्ण ।। सबद कोण सा ?

उत्तर ।। ब्रम्ह का संदेशा ।

प्रष्ण ।। ब्रम्ह का संदेशा कोण सा ?

उत्तर ।। गुरू वाक्य(बचन)

प्रष्ण ।। गुरू बचन का सुख काय से आवे ?

उत्तर ।। परतित ओर बिश्वास आने से

प्रष्ण ।। सब रोग(चोरासी और नरक का)कब मिटे ?

उत्तर ।। ग्रभ मे जन्मना छूटने से ।

प्रष्ण ।। जन्मणा मरणा दुबध्या काय से मिटे ?

उत्तर ।। मोक्ष मिलने से ।

प्रष्ण ।। जीव की जात क्या ?

उत्तर ।। जीव की जात ब्रम्ह है ।

प्रष्ण ।। ब्रम्ह का गुरू कोण ?

उत्तर ।। सतस्वरुप ग्यान

प्रष्ण ।। जीव का मां बाप कोण ?

उत्तर ।। जीव के मां बाप नही है ।

प्रष्ण ।। माँ बाप बिना सुरूं से जीव की उत्पत्ती केसे हुई ?

उत्तर ।। जीव की उत्पत्ती और अंत नही है ।

प्रष्ण ।। जीव का अंत नही हे तो जक्त मे मरता कोण हे ?

उत्तर ।। देह

प्रष्ण ।। जनम कोण लेता है ?

उत्तर ।। चेतन माया

प्रष्ण ।। मुढ कोण ओर चतुर कोण ?

उत्तर ।। जीव ही मुढ और जीव ही चतुर

प्रष्ण ।। मुढ और चतुर होणे का कारण क्या ?

उत्तर ।। ग्यान का

प्रष्ण ।। सत्य ग्यान कौण सा ?

उत्तर ।। आणंद पद का ग्यान सत्य

प्रष्ण ।। भक्ति कोण ते अस्थान से पेदा होवे ?

उत्तर ।। पिछ्ले जन्म के भक्ती अंकुरसे इस जन्म मे भक्ती पैदा होती

प्रष्ण ।। जीव भक्ति मे कोण ते अस्थान मे लगे ?

उत्तर ।। जीवको सतगुरुसे प्रेम होनेसे ।

प्रष्ण ।। सब्द कोण अस्थान मे लागे ?

उत्तर ।। शब्द रटनेसे शब्द जीव के उरमे प्रगट्ता ।

प्रष्ण ।। भ्रम कोण अस्थान सें जावे ?

उत्तर ।। सच झुठ का न्याय करनेसे भ्रम जाता ।

प्रष्ण ।। समाध कोण ते अस्थान से लागे ?

उत्तर ।। सता स्थान याने दसवेद्वार मे ।

प्रष्ण ।। जीव ब्रम्ह काय से होवे ?

उत्तर ।। सत ग्यानसे जीव कोरा ब्रम्ह होता ।

प्रष्ण ।। केवळी ब्रम्ह काय से होवे ?

उत्तर ।। केवल ग्यान घट्मे प्रगट्नेसे ।

प्रष्ण ।। बादळ का घर कोणता ?

उत्तर ।। सुन्न(आकास)

प्रष्ण ।। बादळ काय से आते हे ?

उत्तर ।। इंद्र देव के इच्छा से ।

प्रष्ण ।। सुन्न मे बिजली चमक के उलट कर काय मे समाती हे ?

उत्तर ।। बिजली सुन्न मे चमक कर सुन्न मे बादलोमे ही समाती है ।

प्रष्ण ।। ग्यान रूपी म्हेल का पाया(नीवं)क्या ?

उत्तर ।। सील संतोष ।।

प्रष्ण ।। प्रेम कहाँ रहता हे ।।

उत्तर ।। चित्त मे ।।

प्रष्ण ।। मन पकड़ा कहाँ जाता ?

उत्तर ।। मन त्रिगुटी मे पकड़ा जाता

प्रष्ण ।। किसका मन कब पकड़ा जावे ?

उत्तर ।। संत का मन त्रिगूटी मे ध्यान लगने से ।

प्रष्ण ।। त्रगुटी में ध्यान काय से लागे ।

उत्तर ।। गुरू के ग्यान से ।

प्रष्ण ।। पहले जक्त पेदा हुवा के भक्त ? पहले स्त्री पैदा हुई के पुरूष?पहिले शिष पेदा हुवा के सत्तगुरू ? पहिले राजा हुवा के ब्यास?पहले सच हुवा के झूट ? पहिले सत्त पेदा हुवा के नास्त ?

उत्तर ।। जक्त पहले होवे तो भगत किसने बताई ओर भगत पहिले हुआ तो जक्त केसे ऊपजा ।। स्त्री पहले हुई तो पुर्ष बिन केसे हुई ओर पुर्ष पहिले हुंवा तो स्त्री बिन किसने जाया ।। ब्यास और गुर देव पहिले हुवा तो सिष ओर राजा कांहाँ से उपजे ।। झूट जो पहिले हुवा तो साच को किसने बताया ।। ओर साच पहिले जो हुवा तो झूट केसे उपजा ।। जो पहीले नास्त पेदा होवे तो सत्त को होणे ही नही देवे ।। क्यूं की दुस्मण कूं पेदा कोण होणे देवेगा ।।

----प्रष्ण--- **---उत्तर---**

१) ।। ब्रम्ह का देश कोणता ।।--- -------ब्रम्ह सर्व व्यापी है ।

२) ब्रम्ह का घर कहाँ ।।----------संतो का देह

३) ब्रम्ह बास कहाँ करता ।।----------संतोके हंस मे

४) उसके संत उसको कैसे जाय के परसे ।।--दसवेद्वारमे जिंग ध्वनीसे व दसवेद्वार के बाहर सतशब्द ध्वनीसे

५) ब्रम्हमे कौनसे विधीसे जाय के मीले ।।---सतगुरु कृपासे आते जाते सांसमे राम स्मरण करनेसे

६) ब्रम्हमे मिलणे से क्या सुख होवे ।।--मायाके सुखोमे तुलना करके बताते नही आता । उस सुखके सामने विष्णुके वैकुंठ का सुख कही पे भी नही लगता ।

७) ब्रम्ह आँखो से कैसा देखे ?------संत व सतगुरु के रुपमे

८) ब्रम्ह दृष्टी मे कैसे आवे ?--- ---संत व सतगुरु यही परमात्मा है यह लखनेसे ।

९) ब्रम्ह से बात कैसे करणा ?------जीव के निजमन से

१०) ब्रम्ह का सब निर्णा कहो ?-----ब्रम्ह का निर्णय बंकनालके रास्तेसे दहवेद्वार पहुचने पे अनुभवसे आता ।

११) सुन्न का आकार कहो ?-- ----सुन्न निराकार है ।

१२) गिगन घरके चेन बतावो?---गिगन घरके चेन माया के शब्दोमे वर्णन नही करते आता

१३) जो पुगे हो तो रस्ता बिचके घाट बतावो ?---रस्ता के बिच पाताल घाट स्वर्ग,मेरु आदि घाट है ।

१४) कोण कोण अस्थान छेदके संत जाते है ? ----१२ स्थान छेदन कर संत जाते है । १ कंठ स्थान २ हृदय स्थान ३ मध्य स्थान ४ नाभी स्थान ५ लिंग स्थान ६ गुदा घाट ७ बंकनाल ८ मेरु स्थान ९ त्रिगुटी १० चिदानंद ब्रम्ह ११ शिवब्रम्ह १२ पारब्रम्ह

१५) कोणता देव कोणते अस्थान पे है ?--- -कंठ स्थान पर सरस्वती,हृदय स्थान पर शंकर पार्वती,नाभी स्थान पर विष्णु लक्ष्मी,लिंग स्थान पर ब्रम्हा,गुदा घाट पर गणपती और मेरु स्थान पर यमराज है ।

१६) उसको कैसे परसना ?केसे रहना सो कहो ? उसको ब्रम्ह सुख से परसते आता। ब्रम्ह का रूप पुछते हो तो जीव का रूप कहो । जिव कितना बड़ा है जो सब ग्यान बडे बड़े ग्रंथ सब घट मे देख लेता है । सांस परसांस कैसे करता है । सांस छोड्कर वापीस कैसे लेता है ।-------- ----जिव का रुप सुक्ष्म है परंतु वह सतस्वरुप विज्ञानसे सभी ग्रंथ घट मे देख लेता है व सांस परसांस लेता जाता है ।

भेरी बाजा कैसे बजाता है । जीव धापे उसका रूप प्रिती कैसी आवे ।------अनुभव भावसे ऐसा ब्रम्ह का सुख आवे ।

जीव सुख दु:ख दोणु जाण के कैसे कहता है ।------ग्यान आधार से

भूक भाव डर साच कैसा है ।--------तृप्त सुखोकी भुक है । तृप्त सुख देनेवाले संतो को देखकर रामजी पे भाव आता । रामजीका डर रहता है व वही कालसे छुड्वायेगा यह विश्वास रहता है ।

पांच रंग का रंग गती कह देता है । चित्त मे चितवन ऊपजे ।-------चाहणा पे सुरत परदेस दोड़ती है । -----परदेस मे देखी सब चीज पलक मे यहाँ बता देता हे । सो कोस पर की चीज इस घट मे यहाँ बता देता है । सो कोस पर की चीज जीव निरख यहाँ देख लेता । ब्रम्ह का रूप कहते हो पण इस जीव का रूप बतावो? रुप स्वरुप मे देखना है तो ब्रम्ह के रूप मे सब धरती,आकाश,बनराय,जल,स्थल,पवन,अग्नी,सब देव,मनुष्य,मुनी,राक्षस, ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,समुळ शक्ती,सेंस फणा का सेंहस सभी ब्रम्ह के रूप के अंदर है ।

ब्रम्ह की कल नही पड़ती ------वह अनुप हे । अगाध हे । अरूप है । अरूपी होनें से रूप वर्णा नही जाता ।

जैसा सुख संपत मिलने पे मन मे मगन हो जाते है वैसा ब्रम्ह सुख मिलने पे मन मे मगन हो जाते है ।

ढोल मे नाद,कांसी मे झणकार,बादल मे बिजली ऐसे ही संतोके घट मे ब्रम्ह रहता है ।

पाणी की किमत कोण जाणे-------पाणी की किमत प्यासा जाणता है ऐसा ही ब्रम्ह की किमत ब्रम्हग्यानी जाणता है ।

सेंस के सिरका मणी है सो कोण जाण के कोण बतावे-----जिसने देखा वही बतायेगा।

मच्छी मच्छ सब पाणीकी धारके सामने चल जाते है ऐसे उलटके चढे सोई साधु ब्रम्ह है ।

ये बात जैसा लकड़ी मे चकमक,पोलाद मे पथरी,गारगोटी मे आग है पर बिन भेदी कूं बताणे सें इसमे आग है यह नही मानेगा । गन्ने मे मिठास,दुध मे घृत,तिल्ली मे तेल,किडे मे रेशम,कीट मे भंवर ये बिन भेदी नही मानते ।

जैसें बिना पांखाँ पुरस सें उड़ा नही जाता ऐसे ही भेद बिना सत संगत कैसे करेंगे ।

अरूपी ब्रम्ह का रूप वर्णा नही जाता । ब्रम्ह रुप मे नही सुखमे वर्णा जाता । घृत खाके उसका स्वाद कैसा है कोई बता नही सकते ।

जैसे कामी पुरूष काम भोग को स्त्री संग करता है पूछने बाद कैसा है क्या जबाब देगा ।

पुष्प मे सुंगधी है उस सुगंध का रूप रुप मे नही सुखमे वर्णा जाता । ऐसे ब्रम्ह का सुख रुप मे नही सुखमे वर्णा जाता ।

मच्छी का रस्ता क्या –ऐसे ब्रम्ह का रूप मानो याने जैसे मच्छी का रस्ता बताते नही आता वैसे ब्रम्ह का(रूप)रुख रुप से वर्णन नही करते आता ।

प्रष्ण ।। साधु,जगत,पंडित,जैन कहते है की जैसे जीव कर्म करे वैसा आगाड़ी जीव योनी पाता है । जो कुछ पाप पुण्य करता है सो दुसरी देह धारण करके किया कर्मका फल दुसरी योनी मे जीव भोगता है । ऐसा कहते है सो कैसा ? -----

उत्तर ।। पाप पुण्य का जगत मे भ्रम है । अनेक तरह की ओर करण्या है वहाँ जीव जन्म लेता है । हिंदु का वेद,मुसलमानो का किताब ये कहता है की अंत समय में जीव कूं सुध नही रहता । सुध नही रहेगी तो आसा कैसे रहेगी । मन की आसा सच नही झूटि हे । अभी कुछ चीज की मनमे आसा करे वह तुमको मिलेगी क्या ? जैसा होणकार होता है वैसा जीव का होता है करना कराना सब झूठा है । कर्म भी अच्छे बुरे जैसा होणकार होता है वैसा ही होता है । आदि सुरू में जीव सभी पैदा हुये उस दिन कौनसा कर्म किया सो जीव लख चौरासी,स्वर्ग,नर्क मे जीव कैसे भेज दिये ।

उत्तर ।। आदि मे पहले जगत का प्रलय हुवा । उस दिन जीव के पहले के किये हुये कर्म जैसे के वैसे रहे प्रलय काल मे जीव कर्मो सहित ब्रम्हमे समा गया । जीव पीछ जन्म लेने

से वही कर्म पहले किये हुये उन कर्मो सहीत जन्म ले लिया कर्म ब्रम्ह मे मिलने सें तूटते नही । और वहाँ ब्रम्ह मे कर्म भोगे भी जाते नही जीव को देह मिलणे सें कम होते है और देही होणे से जीव तीन लोगोमे कर्म भोगता है । सब देही का काम है । देह नही तब जीव तो ब्रम्ह है । इस जीव कूं पाप पुण्य कुछ नही लगता ।

।। इति प्रष्ण ऊत्तर को अरथ को अंग संपूरण ।।